Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

उत्तरवैदिककालिक अर्थव्यवस्था के आधुनिक समाजशास्त्रीय आयाम

डॉ. वीरेन्द्र कुमार मौर्य
असि. प्रोफेसर संस्कृत,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आलापुर,
अम्बेडकरनगर।

शोध आलेख सार – उत्तरवैदिककालिक अर्थव्यवस्था आधुनिक अर्थ व्यवस्था के लिए प्रतिदर्श है अर्थात् आधुनिक अर्थव्यवस्था वैदिककालिक अर्थव्यवस्था का अनुसरण करती है। उत्तरवैदिककाल में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था उन्नत अवस्था में थी। अनेक संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में सिंचाई के साधनों खेतों की जुताई–बुवाई से लेकर अनके प्रकार के फसलों का वर्णन प्राप्त होता है। कृषिकार्य के साथ ही साथ अनेक प्रकार के शिल्पों एवं व्यापारिक श्रेणियों का उल्लेख है जो कृषि एवं व्यापार वाणिज्य को उन्नति की ओर संकेत करती है।

मुख्य शब्द – उत्तरवैदिककालिक, अर्थव्यवस्था, आधुनिक, कृषि, संहिता, ब्राह्मण, ग्रन्थ।

उत्तरवैदिककाल में आर्यावर्त में आर्यो के ज्ञान के निमित्त शतपथ ब्राह्मण महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना का वर्णन करता है। आर्यजन यहाँ के वनों को अग्नि के माध्यम से जलाकर पूर्व दिशा की ओर बढ़े और कृषि सम्बन्धी क्रियाएँ सम्पादित की[1] अर्थात् आर्य जैसे–जैसे आगे बढ़ते गये वैसे–वैसे ही भारत के वनों को साफ करते गये और वहाँ पर अपने ग्रामों की स्थापना कर खेती करना आरम्भ कर दिया। शतपथ ब्राह्मण दीर्घारण्यों का उल्लेख करता है।[2] ऐतरेय ब्राह्मण भी पूर्वी भारत के वनों का वर्णन करता है।[3] यह वस्तुतः वन को जलाकर तथा वृक्षों को काटकर भूमि को कृषि योग्य बनाने की प्रक्रिया है। वर्तमान काल में भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में झूमिंग कृषि के माध्यम से आज भी कृषि की जाती है।[4] उत्तरवैदिक काल में कृषि आर्यों का मुख्य उद्यम था। कृषि के द्वारा अन्न उत्पन्न होता था और अन्न को ही जगत् का कर्ता –धर्त्ता माना गया है।

तैत्तिरीय उपनिषद् का कथन है कि अन्न ही ब्रह्म है। अन्न से ही प्राणी उत्पन्न होते है, उत्पन्न होकर अन्न से ही वृद्धि को प्राप्त होते हैं।[5] अतः इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि आर्यों ने अन्नमूलक कृषि कर्म को अत्यधिक महत्ता प्रदान की। वर्तमान काल में भी जीवन के सुचारु संचालन के लिए अन्न की प्रासंगिकता बनी हुई है। आर्यजन हल–बैल की सहायता से कृषि करते थे। अथर्ववेद का कथन है कि सर्वप्रथम पृथु वैन्य ने हल एवं कृषि को जन्म दिया।[6] वर्तमान काल में भी हल बैल की सहायता से कृषि की जाती है। वर्ष में दो फसलें बोयी जाती

थीं।[7] तैत्तिरीय संहिता में उल्लेख है कि गयी जौ शीत काल में बोया जाता था और ग्रीष्म काल में काट लिया जाता था। धान वर्षा काल में बोया जाता था और पतझड़ में पक जाते थे।[8]

वर्तमान काल में भी वर्ष में दो फसलें बोयी जाती हैं–रबी और खरीफ।[9] रबी फसल के अन्तर्गत गेहूँ जौ, चना, मटर, मसूर, आलू आदि फसलें आती हैं जबकि खरीफ के अन्तर्गत चावल,ज्वार बाजरा, कपास आदि फसलें प्रमुख हैं। शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चारों क्रियाएँ जुताई बुवाई, कटाई एवं मड़ाई (कृषन्तः, वपन्तः,लुनन्तः,मृषन्तः) का उल्लेख है।[10] खेतों की उपज बढाने के लिए पशुओं की प्राकृतिक खाद का प्रयोग किया जाता था।[11] आज भी कृषि कार्य हेतु सर्वप्रथम जुताई की जाती है, तत्पश्चात् खेत में बीज बोये जाते हैं। फसल पक जाने पर उसकी कटाई की जाती है तथा फसल की मड़ाई करके अन्न निकाले जाते हैं। वर्तमान काल में जैविक कृषि के माध्यम से, जिसमें पशुओं की गोबर की खाद का प्रयोग किया जाता है, अन्नोत्पादन किया जा रहा है। सिंचाई के लिए वर्षा एवं कूप के जल के अतिरिक्त अथर्ववेद नहरी सिंचाई का उल्लेख करता है।[12] वर्तमान काल में भारतीय कृषि मानसून पर आश्रित है। सिंचाई के साधनों में कूप से गोवा, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु आदि प्रान्तों से सिंचाई की जाती है जबकि उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु, हरियाणा आदि नहर सिंचित प्रान्त हैं।[13] अथर्ववेद में यह उल्लेख है कि अनावृष्टि से कृषि को अत्यन्त हानि होती थी। इसलिए स्थान–स्थान पर वृष्टि के लिए प्रार्थना की गयी है।[14] अनावृष्टि के साथ ही साथ अतिवृष्टि और विद्युत्पात से भी कृषि को हानि पहुँचती थी। इन दैवी आपत्तियों के दूर करने के लिए अथर्ववेद में यत्र–तत्र मंत्रों का उल्लेख है।[15] कीड़े–मकोड़े और टिड्डियों से भी कृषि को भय बना रहता था। इस भय के के निवारण के लिए भी अथर्ववेद में यत्र–मंत्र का उल्लेख है।[16] छान्दोग्योपनिषद् एक दुर्भिक्ष का उल्लेख करता है जो टिड्डियों द्वारा किये गये कृषि विनाश के कारण पड़ा।[17] वर्तमान में भी प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए तथा अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि के निवारणार्थ मंत्रों एवं यज्ञीय कर्मकाण्डों और टिड्डियों के प्रकोप को रोकने के लिए कीटनाशकों को विधान दिखाई पडता है। वाजसनेयिसंहिता में गोधूम, यव, व्रीहि, माष, मूँग, मसूर, तिल, श्यामाक, नीवार आदि की उपज का वर्णन है।[18] वर्तमान समय में भी ये फसलें उगायी जाती हैं। अथर्ववेद में 6 से लेकर 12 बैलों द्वारा खीचें जाने वाले हलों का उल्लेख है।[19] सम्भवतः गंगाघाटी क्षेत्र में लौह उपकरण[20] की सहायता से कृषि कार्य करने पर बड़े पैमाने पर कृषि अधिशेष उपलब्ध हुआ और इसके परिणामस्वरूप अनेक शिल्पों का विकास हुआ। जैसे अथर्ववेद चाँदी का उल्लेख करता है।[21] सोने की भाँति चाँदी भी आभूषणों के निर्माण में प्रयुक्त होती थी।[22] अन्य धातुओं में त्रपु(टीन) तथा सीसा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[23] अथर्ववेद में शण (सन) का उल्लेख हुआ है।[24] जिससे वस्त्र, आच्छादन, बोरे, चटाईयाँ आदि बनायी जाती थीं। उसी प्रकार भारत में 1970 के दशक में हरितक्रान्ति के माध्यम से जिसमें अधिक खाद, अधिक जल तथा उन्नत मशीनों के माध्यम से अधिक मात्रा में कृषि अधिशेष उपलब्ध हुआ।[25] उपलब्ध कृषि अधिशेष तथा औद्योगिकीकरण के परिणारूवरूप अनेक प्रकार के शिल्पों का विकास हो रहा है।

उत्तरवैदिक काल में व्यापारियों की अनेक श्रेणियों का उल्लेख है।[26] वर्तमान में व्यापरियों की श्रेणियाँ कम्पनियों एवं निगमों के रूप में विद्यमान हैं। उत्तरवैदिक काल में ऋण के लिए कुसीद तथा उधार देने के लिए

कुसीदिन् शब्द मिलता है। इससे यह ज्ञात होता है कि उस समय ब्याज पर धन मिलता था। इसी प्रकार वर्तमान काल में विविध कार्य करने के लिए बैंकों एवम् अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा कृषि व्यापार एवं गृह निर्माण के लिए ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराये जाते हैं।[27] उस समय व्यापार वाणिज्य विशेषतया विदेश से न हो सका तथापि उत्तरवैदिक अर्थव्यवस्था निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर थी। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार पश्चिमी भारत में अधिसंख्यक ग्रामों की स्थापना हो चुकी थी[28] ऐसा प्रतीत होता है कि जनसंख्या एवं साधनों की वृद्धि के परिणामस्वरूप छोटे ग्राम बड़े ग्राम के रूप में और बड़े ग्राम नगरों के रूप में विकसित हो रहे थे, जो नगरों की पूर्व अवस्था के सूचक हैं। इसी प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था बन्द अर्थव्यवस्था होने के कारण व्यापार पूर्णतया विकसित नहीं था किन्तु 1992 के बाद उदारीकरण के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था में अत्यन्त प्रगति हुई जिसके परिणामस्वरूप अनेक उपनगरों का विकास हुआ।

इस प्रकार 'उत्तरवैदिककालिक अर्थव्यवस्था के आधुनिक समाजशास्त्रीय आयाम एक नवीन विषय है, जो आधुनिक अर्थव्यवस्था को ज्ञापित करने के साथ ही समाज में इसकी महती भूमिका को प्रकट करता है।

सन्दर्भ

1. शतपथ ब्राह्मण 1/4/1/10
2. शतपथ ब्राह्मण 13/3/7/10
3. ऐतरेय ब्राह्मण 3/44
4. सामान्य अध्ययन (यूनिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली) पृष्ठ 230
5. तैत्तिरीयोपनिषद् 3/3
6. अथर्ववेद 8/10/24
7. तैत्तिरीय संहिता5/1/7/3
8. तैत्तिरीयोपनिषद् 4/7/2/10
9. भारतीय अर्थव्यवस्था, सर्वेक्षण तथा विश्लेषण(2001) डॉ एस0एन0 लाल पृष्ठ 219
10. शतपथ ब्राह्मण 1/6/2/3
11. अथर्ववेद 3/14/3
12. अथर्ववेद 3/13/7
13. भारत का भूगोल (सामान्य अध्ययन विशेषांक, वाणी प्रकाशन) पृष्ठ123–24
14. अथर्ववेद 7/18/39
15. अथर्ववेद 7/18/2
16. अथर्ववेद 6/50/52
17. छान्दोग्योपनिषद् 10/1–3

18. वाजसनेपि संहिता 18/12, 19/22, 21/29

19. अथर्ववेद 6/9/1

20. अथर्ववेद 9/5/4

21. अथर्ववेद 5/2/28

22. तैत्तिरीय संहिता 2/2/9/7, पंचविंश ब्राह्मण 17/1/14

23. वाजसनेपि संहिता 17/2/1, अथर्ववेद 11/3/17, 12/2/1

24. अथर्ववेद 2/4/5

25. भारतीय अर्थव्यवस्था, सर्वेक्षण तथा विश्लेषण(2001) डॉ एस0 एन0 लाल पृष्ठ 2, 28, 29

26. वाजयनेपि संहिता–23/19/1

27. भारतीय अर्थव्यवस्था, सर्वेक्षण तथा विश्लेषण(2001) डॉ एस0 एन0 लाल पृष्ठ 2, 24, 25

28. ऐतरेय ब्राह्मण–3/44